www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महाकाल का स्वरूप और उनकी भावी रीति-नीति

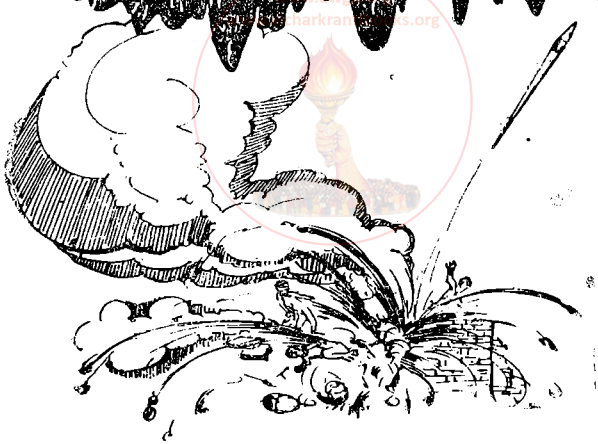

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महाकाल का स्वरूप और उनकी भावी रीति-नीति

यह युगसन्धि की बेला है। परिवर्तन की घड़ियाँ सदा जटिल होती हैं। एक शासन हटता दूसरा आता है तो उस मध्यकाल में कई प्रकार की उलट पुलट होती देखी गई है। गर्भस्थ बालक जब छोटी उदरदरी से बाहर निकल कर सुविस्तृत विश्वमें प्रवेश करता है तो माता को प्रसव पीड़ा सहनी पड़ती है और बच्चा जीवन मरण से जूझने वाला पुरुषार्थ करता है। प्रभात काल से पूर्व की घड़ियों में तमिस्रा चरम सीमा तक पहुँचती है। दीपक के बुझते समय बत्ती का उछलना फुदकना देखते ही बनता है। मरणासन्न की साँसें इतनी तेजी से चलती हैं मानो वह निरोग और बलिष्ठ बनने जा रहा है। चींटी के जब अन्तिम दिन आते हैं तब उसके पर उगते हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि परिवर्तन की घड़ियाँ असाधारण उलट पुलट की होती हैं। उन दिनों अव्यवस्था फैलती, असुविधा होती और कई बार संकट विग्रहों की घटा भी घुमड़ती है। युग परिवर्तन की इस सन्धि बेला में भी ऐसा ही हो रहा है। असुरता जीवन मरण की लड़ाई लड़ रही है और देवत्व को उसे पदच्युत करके सिंहासनारूढ़ होने में अनेक झंझटों का सामना करना पड़ रहा है। भूतकाल में भी ऐसे अवसरों पर यही दृश्य उपस्थित हुए हैं, ऐसे ही घटनाक्रम चले हैं, जैसे कि इन दिनों सामने हैं।

परिवर्तन की प्रक्रिया चल तो बहुत समय से रही है पर उसको आरम्भिक मन्दगति को द्रुतगामी बनने का अवसर इन्हीं दिनों मिला है। प्रकृति सब रुग्ण शरीर से विषाक्तताको निकाल बाहर करने के लिए अधिक तत्परता बरतती है तो कई प्रकार के उपद्रव उठ खड़े होते हैं। उल्टी, दस्त, ज्वर आदि में रोगी को कष्ट तो अवश्य होता है पर संचित मलों की सफाई इससे कम में हो भी नहीं सकती। रक्त में भरी विषाक्तता फोड़ा फुन्सी बनकर बाहर आती और मवाद बनकर विदा होती है। देखनेमें यह अरुचिकर लगता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है पर चिकित्सक यही कहते हैं घबराने की कोई बात नहीं। प्रकृतिको अपना काम करने देना चाहिए। जो सफाई चिकित्सक मुद्दतोंमें नहीं कर सकते थे वह उस उभार में कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो जाती है। विषमता के निष्क्रमण में ऐसा होता भी है। सेना भागते भागते अपने क्षेत्र को नष्ट कर जाती है ताकि शत्रु के हाथ में कोई सुविधा जनक परिस्थिति न लगे। लगता है सफाई के दिनों में ऐसी ही रणनीति चल रही है। लगता है नाली साफ करते समय उड़ने वाली बदबू की तरह इन दिनों जो असुखद घटित हो रहा है उसके पीछे सुखद सम्भावनाएँ ही झाँक रही हैं।

प्रसव-पीड़ा में एक ओर प्रसूता को अत्यधिक कष्ट होता है, दूसरी ओर नवजात शिशु के आगमन की कल्पना में हृदय भी हुलसता है. हर परिवर्तन ऐसे ही विग्रह करता है. कन्या ससुराल जाती है तो परिवारका विछोह कम व्यथित नहीं करता किन्तु ससुराल में घर की रानी बनने का सपना उसे धैर्य बँधाता है और आश्वसन भी देता है। परिवर्तन की इस वेला में आगत कष्टों को इसी रूप रूप में देखा जाना चाहिए।

अदृश्य दर्शियों के भविष्य दर्शन इन दिनों को अधिक त्रास दायक बताते हैं। उनका कथन है कि सन् १९८०से २००० के मध्यवर्ती बीस वर्ष भारी उथल पुथल के हैं। उनमें एक ओर दुष्प्रवृत्तियों की कष्टकारक दण्ड व्यवस्था अपनी चरम सीमा पर होगी तो दूसरी ओर नवसृजन के आधार भी खड़े होंगे। इन परस्पर विरोधी गति विधियों से असमंजस तो होता है पर साथ ही यह जानकर समाधान भी मिलता है कि ऐसे समयों पर इस स्तर की दुहरी गतिविधियों का चलना अस्वाभाविक नहीं है। किसान हल चलाकर खेत के खर पतवार और कंकड़ पत्थर हटाता है साथ ही बीज बोने की तैयारी भी करता है। इनमें से एक कार्य ध्वंशात्मक है दूसरा सृजनात्मक दोनों के मध्य परस्पर विरोध देखा जा सकता है पर वस्तुतः वह पूरक भी तो होता है। डॉक्टर आपरेशन करने में जितनी कुशलता दिखाता है उतनी ही तत्परता घाव भरने के उपक्रम में भी बरतता है। माता का दुलार और सुधार साथ-चलता है। पतझड़ में पुरातन पत्र पल्लव गिरते झड़ते हैं, साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही बसन्त की हरीतिमा का पूर्वाभास भी होता है।

दूरदर्शियोंके अनेक वर्ग हैं और उन सबने अपने अपने ढंगसे इस सन्धि वेला को दुहरी संभावनाओं से भरा पूरा बताया है। वे निकट भविष्य में सुखद की सम्भावना बताते हैं। अपने पक्ष के समर्थन में उनके दृष्टिकोण तो अलग-अलग हैं, पर निष्कर्ष एक ही तथ्य पर जा पहुंचते हैं। सभी की यह मान्यता है कि कष्टकारक दिन समीप हैं। ऐसे पूर्व कथन हानिकारक भी होते हैं और लाभदायक भी।

हानिकारक उनके लिए जो डरते, घबराते और हड़बड़ी में चिन्ता-ग्रस्त और हतप्रभ और किंकर्तव्य विमूढ़ बनते हैं। यह हड़बड़ी वास्तविक विपत्ति से अधिक हानि प्रद होती है। कहावत है कि जितने व्यक्ति मौत से मरते हैं उमसे अधिक मरणभय से असंतुलित होकर बेमौत मरते हैं।

लाभदायक उनके लिऐ जो अशुभ संभावनाओं का पूर्वाभास पाकर अपनी जागरूकता बढ़ाते हैं। सूझ-बूझ से काम लेते और धैर्य, साहस को निखारतें हैं। ऐसे पराक्रमी अपने कौशल को निखारनेमें इन संकट की घड़ियों को दैवी वरदान की तरह सहायक मानते हैं। विपत्तियों से जूझने के सत्परिणामों की जानकारी प्राप्त करनी हो तो उसका विस्तृत विवरण मोर्चे पर लड़ने वाले योद्धा, संयम की साधना करने वाले तपस्वी, संघर्षो से जूझकर महामानव बनने वाले परमार्थ परायण लोकसेवक ही भली प्रकार बता सकते हैं। वे एक स्वर से यही कहते पाये जायेंगे कि परीक्षा की घड़ी कठिन तो अवश्य थी पर तपने और कसने के उपरान्त खरा-खोटा कहलाने का जो श्रेय मिल सका उस कष्टसाध्य प्रक्रिया में होकर गुजरे बिना और किसी तरह उपलब्ध नहीं हो सकता था। सम्भव है विश्व मानवको इसी प्रकार से भट्टी में गलाया और नये साँचे में ढाला जा रहा हो।

इन दिनों अशुभ सम्भावनाओं के सम्बन्ध में खगोल विज्ञानी कहते हैं कि सूर्य पर इन्हीं दिनों भारी विस्फोट कलक-उभरते जा रहे हैं। उनकी ज्वालायें लाखों मील ऊँची लपकेंगी और असाधारण ऊर्जा अन्तरिक्ष में फेंकेगी। उसका प्रभाव पृथ्वी के पदार्थों और प्राणियों पर बुरा पड़ेगा। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विघातक प्रक्रिया कई वर्षों तक चलती रहेगी। अन्तरिक्ष विज्ञानी अन्तर्ग्रही परिस्थितियों के कारण धरती के वातावरण में तापमान बढ़ने और उससे सचित हिम भण्डार गलने की बात कहते हैं। उनसे जल प्रलय जैसी घटनायें घटित हो सकती है। भूगोल का पर्यवेक्षण करने वाले बताते हैं कि यन्त्रों से बढ़ते वायु प्रदूषण से अगले दिनों घुटन पैदा होगी। बढ़ता हुआ कोलाहल विक्षिप्तता उत्पन्न करेगा। अणु विस्फोटों से उत्पन्न विषाक्त विकिरण से जीवनी शक्ति का भयानक ह्रास होगा। भूगर्भ वेत्ता बताते हैं कि पेयजल, ईंधन तथा खनिज सम्पदा का जिस गति से दोहन और ह्रास हो रहा है, उसे देखते हुए इन साधनों से धरती के दिवालिया हो जाने का खतरा है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के पर्यवेक्षक कहते हैं—भय, लोभ, और अविश्वास के तत्व शासनाध्यक्षों के मन में बुरी तरह घुस रहे हैं। फलतः तीसरे महायुद्ध की सम्भावना बढ़ रही है। अणु आयुधों के बारूद खान में एक चिनगारी पड़ने की देर है कि विस्फोट से धरती की स्थिति विषाक्त बादलों से भर जायगी। फलतः प्राणियों का अस्तित्व इस रूप में नहीं बन सकेगा, जैसा आज है।

नृतत्व विज्ञानी कहते हैं कि बढ़ती हुई जनसंख्या अपने समय की सबसे बड़ी समस्या हैं। कुछ ही दिनों में अनियन्त्रित प्रजनन पर भूख, प्यास युद्ध और महामारी की गाज गरजेगी और फलतः यह अवांछनीय प्रजनन स्वयं तो मरेगा ही धरती की परिस्थितियों को भी इस योग्य न रहने देगा जिसमें बचे खुचे लोगों को निर्वाह मिल सके।

समाज वेत्ता कहते हैं कि स्वार्थपरता, संग्रह, विलास और उपभोगकी लिप्सा पारस्परिक स्नेह सहयोग की उन परम्पराओं को नष्ट कर देगी जिसके आधार पर मानवी विकास सम्भव हुआ है। अनुशासन की अवहेलना, उच्छृंखलता में गर्व, अपराधों पर अनियन्त्रण की स्थिति जिस क्रम से बढ़ रही है उससे समाज संस्था में आदर्श नाम की कोई चीज बच नहीं पायेगी। लोग भूखे भेड़िये की तरह एक दूसरे पर घात-प्रतिघात लगाते और यादवी आत्मघात के शिकार बनते पाये जायेंगे। ये सभी सम्भावनाएँ उन मूर्धन्य लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने व्यक्त की हैं जिनके निष्कर्ष तथ्यपूर्ण और प्रामाणिक माने जाते हैं। इन समस्याओं के रहते भविष्य अन्धकारमय लगता है। जिनके हाथ में संसार के भाग्य निर्धारण की शक्ति है वे पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में रह रहे हैं और ऐसा कुछ कर नहीं पा रहे हैं कि विनाश के प्रवाह को रोकने और विकास के ठोस आधार खड़े करने में सफल हो सकें। वे भी चिन्तित और निराश दीखते हैं। दो हाथ जोड़ने का प्रयत्न करने पर रस्सी चार हाथ अन्यत्र से टूटने लगे तो प्रयत्न कर्त्ताओं को भी हार मानते देखा जाता है।

संसार में ऐसे अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न भविष्यवक्ता भी यदा-कदा देखने सुनने में आते हैं जिनके कथन सुनिश्चित माने जाते हैं। जो कथन अब तक सही सिद्ध हो चुके वे यही बताते हैं कि इनके द्वारा कही गई बातें भविष्य में भी सच हो सकती हैं। इस स्तर के सूक्ष्म दर्शियों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य को कष्टकारक माना गया है। मनुष्यकृत उपद्रवों के अतिरिक्त दैवी प्रकोपों की सम्भावना व्यक्त की गई।

अध्यात्म वेत्ता कहते हैं कि समस्त मनुष्य समाज एक शरीर की तरह है और उसके घटकों को सुख दुखमें सहयोगी रहना पड़ता है। एक नाव में बैठने वाले साथ साथ डूबते और पार होते हैं। मानवी चिन्तन और चरित्र यदि निकृष्टता के प्रवाह में बहेगा तो उनकी अवाँछनीय प्रतिक्रिया सूक्ष्म जगतमें विषाक्त विक्षोभ पैदा करेगी और प्राकृतिक विपत्तियोंके रूपमें प्रकृति प्रताड़ना बरसेगी। चित्र विचित्र स्तर के दैवी प्रकोप संकटों और त्रासों से जन-जीवन को अस्त-व्यस्त करके रख देंगे। हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि अपनी सज्जनता तक ही सीमित न रहे, वरन् आगे बढ़कर सम्पर्क क्षेत्रों की अवाँछनीयता से जूझें। जो इस समूह धर्म की अवहेलना करता है वह भी विश्व-व्यवस्था की अदालत में अपराधी माना जाता है। सामूहिक कर दण्ड की तरह निर्दोषी समझे जाने वालों को भी त्रास सहना पड़ता है। गेहूँ के साथ घुन पिसता है—सूखे के साथ गीला जलता है—जैसी उक्तियाँ इस अर्थ में सच हैं कि सामूहिक उत्तरदायित्वोंकी अवहेलना व्यापक विपत्तियोंका निमित्त कारण बनती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सूर्य का पृथ्वी से सीधा सम्बन्ध है और इसी का प्रभाव विशेष रूप से धरती के वातावरण को प्रभावित करता है। पर इस बार वृहस्पति ग्रह में भी विलक्षण प्रकार की उत्तेजनाएं उत्पन्न हो रही हैं और उनका सीधा प्रभाव अपनी धरती पर भी पहुंचने की सम्भावना है। सूर्य स्पॉट और वृहस्पति के विकिरण का प्रभाव कोढ़ में खाज की तरह दुहरी विपत्ति का निमित्त बन सकता है।

ऐसे ही अनेक कारणों को दृष्टि में रखते हुए सूक्ष्म दर्शियों ने सन ८० से २००० के मध्यवर्ती २० वर्षों को अव्यवस्था, विक्षोभ और विपत्तिसे भरे पूरे बताया है। इन प्रतिपादनों की एक संगति यह भी बैठती है कि युग परिवर्तन की सन्धि वेला आ गई। उसमें ऐसी उलट-पुलट होनी स्वाभाविक है। असुरता अपना स्थान छोड़ते छोड़ते जीवन मरण की लड़ाई लड़ेगी। देवत्व को भी इन्हीं दिनों सत्तारूढ़ होना है। इसलिए प्राचीन काल के देवसुर संग्राम की तरह इन दिनों भी व्यापक विग्रह दृष्टिगोचर हो और उससे सामान्य जन-जीवन में अस्त-व्यस्तता उत्पन्न हो तो उसे अप्रत्याशित नही माना जाना चाहिए।

इस विषम वेला में विपत्तियों का निराकरण और सन्तुलन का समापन बड़ा काम है। इस दुहरे समापन का उत्तरदायित्व सृष्टा ही सभाल सकता है। समय-समय पर प्रस्तुत होते रहने वाले असन्तुलनों को संभालने के लिए उस आद्य शक्ति को स्वयं अवतरित होना पड़ा है जिसने समस्त ब्रह्माण्ड में इस अद्भुत विश्व उद्यानकी संरचना की है और उसे सर्वत्र सुन्दर बनाने में अपनी कलाकारिता दांव पर लगा दी है। मनुष्य ससीम हैं, वह सीमित क्षेत्र में—सीमित मात्रा में सीमित उत्तरदायित्वही वहन कर सकता है। व्यापक समस्याओं के समाधान में सृष्टा को बागडोर सभालनी पड़ती है। इसके सुनिश्चित आश्वासन, गीता के पृष्ठों में "यदा-यदा हि धर्मस्य...." के रूप में अंकित हैं। इस बार भी अधर्म के उन्मूलन और धर्म के संस्थापन की भूमिका उसी को निभानी है।

भगवान निराकार हैं। उनका कर्तृत्व चेतना क्षेत्र में उभरता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और वह प्राणियों में दृष्टिगोचर होता है। हलचलें पदार्थ में होती हैं। कर्म शरीर करता है और ज्ञान का उदय अन्तराल में होता है। अन्तराल ब्रह्मक्षेत्र है। पुरुषार्थ कर्मक्षेत्र। भगवान क्षेत्राधिपति हैं इसलिए वे चेतना को झकझोरते हैं। इससे उत्पन्न उभार ही कार्यरत होता है और पुरुषार्थ के रूप में उसका परिचय मिलता है। प्रज्ञावतार की प्रेरणाएँ देव मानवों का अन्तराल उछालेंगी और उसके अनुशासन में चलने वालों के मन को उत्कृष्ट चिन्तन तथा शरीर को श्रेष्ठ आचरण के लिए विवश होना पड़ेगा। भूतकाल में भी यही होता रहा है। यही अब भी होना है। भगवान अपनी अवतरण लीलाएँ देवमानवों के द्वारा सम्पन्न करेंगे। इस युग सन्धि में व्यापक परिवर्तन की जो महान प्रक्रियायें सम्पन्न होने जा रही हैं, उनमें भगवान और उसके भक्तों की सम्मिलित भूमिका होगी। राम ने कृष्ण ने अकेले ही अधर्म उन्मूलन का प्रयोजन पूरा नहीं किया था। उनका हाथ बटाने में, कितने ही देव मानव सहभागी बने थे। हर अवतार का लीला सन्दोह इसी प्रकार का रहा है। प्रज्ञावतारकी कार्य पद्धति भी उस पूर्व परम्पराके अनुरूप ही रहेगी।

देव मानवों का अवतरण समयानुसार हो चुका। वे अब इतने समर्थ हो गए कि अपने जीवनोद्देश्य युग अवतार के सहभागी बनने की भूमिका को निभा सकें। अरुणोदय की प्रथम किरणें पर्वत शिखर पर चमकती हैं। उसके बाद उनका आलोक नीचे उतरता और ऊर्जा का व्यापक वितरण करता है। जाग्रत आत्माएँ देव मानवों के रूप में अपनी विशिष्टता का इन्हीं दिनों परिचय देंगी और महाकालके संकेतों पर अपनी रीति-नीति निर्धारित करेंगी। विनाश की सम्भावनाओं से जूझने और भविष्य का निर्माण निर्धारण करने का बहुमुखी कार्यक्रम सामने है। प्रज्ञा परिजनों को अपने हिस्से का उत्तरदायित्व अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होकर स्वयं ही अपने कंधे पर वहन करना है। उसी में उनके वर्चस्व की सार्थकता है।

★

क्र०१३०/ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org